

चनं स्नेहपर्याकुलात्तरम् R. SCHL. 1, 23, 1. वचनं क्रोधपर्याकुलात्तरम् 58, 6. 59, 12. — 2) in Verwirrung oder Unordnung gerathen, aus seinem natürlichen Zustande gebracht, aufgeregt, verwirrt (eig. und übertr.): मूर्धना: ÇĀK. 29. तथा पर्याकुले तस्मिन्निवेशे MBh. 1, 7786. एवं पर्याकुले लोके मर्यादा न भविष्यति 3, 13082. 12, 475. सर्वं पर्याकुलं जगत् R. 2, 41, 15. दिशः पर्याकुलाश्चासन्नजसा तत्र संवृताः gleichsam durcheinandergeworfen, nicht zu unterscheiden 4, 39, 9. दिशः पर्याकुलीभूतास्तिमिरेण संवृताः R. GORR. 2, 40, 13. वाताः पर्याकुलाः MBh. 3, 13085. हृदय R. 6, 21. पर्याकुलो ऽस्मि । शयनभूमिमार्गमादेशय ÇĀK. 72, 12. 60, 10. SĀH. D. 63, 9. पर्याकुलीकुर्वन्वृद्धस्त्रीकुमारानिय प्रातः (गत्रः) ÇĀK. Ch. 24, 11.

पर्याकुलत्व (vom vorherg.) n. Verwirrung: मरुताम् KUMĀRAS. 2, 25.

पर्याख्यान n. nom. act. von ख्या mit पर्या P. 2, 4, 54, Vārtt. 1, Sch.

पर्याचित (von चि mit पर्या) n. N. pr. (wohl einer Oertlichkeit) गाṇa घाचितादि zu P. 6, 2, 146; vgl. die Scholl.

पर्याण (für परिषाण, von या mit परि) n. 1) circuitus oder adj. einen Umweg bildend: सा यथा सृतिरञ्जसायन्येवमभिज्ञवः षष्ठः स्वर्गस्य लोकस्याय यथा मरुतायः पर्याण एवं षष्ठः षष्ठः स्वर्गस्य लोकस्य AIT. Br. 4, 17. — 2) n. Sattel TRIK. 2, 8, 47. 3, 3, 373. H. 1252. HALĀ. 2, 287. VARĀH. BṚH. S. 88, 1. 92, 6. अयनीत° adj. (तुरग) VID. 46. रत्न° adj. KATHĀS. 26, 85. Vgl. पत्ययन.

पर्याण्डन (von नड् mit पर्या) n. Umwurf: सोम° ÇĀT. Br. 3, 3, 4, 6, 2, 3. KĀTJ. ÇR. 7, 7, 1. 4. 9, 9.

पर्याप्ति (von आप् mit परि) f. 1) Abschluss ÇĀT. Br. 2, 1, 4, 8. — 2) Genüge: पर्याप्तित्वचनेष्वलमर्थेषु P. 3, 4, 66. AK. 3, 4, 22, 79. 32 (COLEBR. 28), 13. नान्तस्येव (doch wohl नाम्तस्येव zu lesen) पर्याप्तिर्मास्ति ब्रुवति त्वयि MBh. 12, 4716. नास्ति व्यसनिनां वत्स भुवि पर्याप्तये धनम् KATHĀS. 26, 199. 33, 34. स नन्दिरुद्रस्पर्धायां मानां पर्याप्तिमासद् RĀGA-TAR. 1, 127. = प्रकाश MED. t. 131. = प्रकाश (wohl nur ein Schreibfehler) ÇĀDDAR. im ÇKDR. — 3) Befähigung, das Gewachsensein einer Sache; = कुशल AK. 3, 4, 26, 206. प्रविष्टः सो ऽप्यप्रयत्नां तत्र नेत्रोत्सवप्रदाम् । धातुरद्भुतनिर्माणपर्याप्तिमिव त्रपिणीम् ॥ KATHĀS. 26, 47. — 4) das Erreichen, Erlangen (प्राप्ति) MED. — 5) Vertheidigung, Selbstvertheidigung AK. 3, 3, 5. H. 1502. MED. — 6) = स्वल्पसंबन्धविशेषः । स च सर्वयामिव पदार्थानां विशिष्टबुद्धिनियामकः । पदार्थभेदेन नाना । यथा । पर्याप्तिशायमेका घट इमौ द्वौ इत्यादिप्रतीतिसात्त्विकः स्वल्पसंबन्धविशेषः । इति दीधितिः । समवायेन गुणे गुणस्यासत्त्वे ऽपि चत्वारो गुणा इत्यादिप्रतीत्या गुणादिषु संब्यादिमहानियामका ऽपि तादृशसंबन्धः । इति सामान्याभावे जगदीशः । द्वितीयव्युत्पत्तिवोदे गदाधरभट्टाचार्यश्च ॥ ÇKDR. discrimination or distinction of objects according to their natural properties WILS.

पर्याप्लव (von लु mit पर्या) m. Umlauf: यादृशे पुनः पर्याप्लवे मध्ये षड्-रूपं संपद्येत TS. 7, 3, 2, 2. KĀṬH. 33, 7.

पर्याप्य (von 3. इ mit परि) m. P. 3, 3, 38. 6, 2, 144. 1) Umgang, Umlauf KĀTJ. ÇR. 13, 3, 19. Umdrehung, Windung: जालं त्रिपर्यायम् 7, 4, 7. — 2) Ablauf (der Zeit). = पर्यय COLEBR. und LOIS. zu AK. 3, 3, 33. सम-युज्यत रेक्ष्य कालपर्यायधर्मणा (vgl. कालधर्म) MBh. 3, 15974. अत्रैका काला मरुवावीर्या येन पर्यायकर्मणा । कालतुल्यः सपत्नानां त्वं त्तिप्रमनोयसे ॥ HARIV. 4791. कालपर्यायेण (°पर्यायेण?) nach Verlauf einiger Zeit VET. id LA. 21, 18. पर्यायस्याद्य संप्राप्तं फलं पश्य सुदारुणम् des Wech-

sels der Zeiten MBh. 6, 3745. — 3) regelmässige Wiederkehr, Wiederholung SUÇR. 2, 233, 14. तत्सत्त्वे पर्यायेण कुर्युः LĀTJ. 5, 12, 6. अग्निपवस्त्रि-पर्यायः KĀTJ. ÇR. 9, 3, 2. 10, 1, 4. 3, 14. स्थितं पूर्वं जलं यत्र पुनस्तत्रैव गच्छति । इति पर्यायमिच्छती प्रतीति उदयं पुनः ॥ MBh. 4, 612. सो ऽहं पर्यायवाक्येन पर्वतान्स्ममुपस्थितः so v. a. mit denselben Worten HARIV. 9647. तस्य वाक्यस्य पर्यायम् 9632. चतुर्थे पर्याये beim vierten Mal ÇĀMĀ. bei WIND. SANCARA 114. — 4) Aufeinanderfolge, Reihenfolge AK. 2, 7, 36. 3, 4, 22, 149. H. 1503. an. 3, 491. MED. j. 88. HALĀ. 4, 54. MBh. 3, 3089. लोकपर्यायवृत्तात् प्राज्ञो ज्ञानाति नेतरः Spr. 1424. ययौ च तत्प्र-वृत्तां त्णामूर्धमथः त्णाम् । उच्छ्रायपातपर्यायं धनिनां दर्शयन्निव ॥ KATHĀS. 25, 44. अथ पर्यायशः सर्वास्वाह्वानायोगचक्रमे । पर्यायशःप्यगस्त्यस्य सम-पद्यत die Reihe kam an MBh. 13, 4755. P. 3, 3, 38. Sch. पितृपर्यायागतं व-नम् PAÑĀT. 21, 5. 247, 4. पर्यायेण der Reihe nach, abwechselnd (Gegens. युगपद् aufein. Mal, zugleich) M. 4, 87. MBh. 13, 2201. HARIV. 10828. SŪRJAS. 13, 25. P. 7, 3, 31. Schol. zu P. 2, 3, 9. RĀGA-TAR. 5, 284. युगपदिति पर्यायनिवृ-त्त्यर्थम् Schol. zu P. 6, 1, 200. एष पर्यायवामो मे वसूनां संनिधौ कृतः MBh. 1, 3919. °सेवा KUMĀRAS. 2, 36. उपशयो विशयाश्च पर्यायशयनार्थं कौ AK. 3, 3, 32. पर्यायालिङ्गित KATHĀS. 42, 149. PRAB. 21, 6. — 5) eine regelmässig wiederkehrende Reihe, Wendung, Satz (in Formeln, liturgischen Handlungen u. s. w.); im Ritual besonders die drei Umläufe der nächtlichen Cerimonien mit den Soma-Schalen im Atirātra AIT. Br. 3, 41. 4, 5. PAÑĀV. Br. 9, 1, 4. 3, 3. ÇĀṆEH. Br. 17, 4. 8. रात्रि° ÇR. 6, 13, 5. 9, 19, 4. KĀTJ. ÇR. 20, 8, 14. LĀTJ. 2, 7, 5. 3, 4, 7. (स्तीमाः) चतुर्पर्यायाः 6, 8, 1. fgg. 5, 1. 4, 4, 1. त्रयः पर्यायाश्चमत्तैश्चतुस्तोत्रः पर्यायः KĀTJ. ÇR. 12, 6, 4. ĀÇV. ÇR. 5, 9. 10. 6, 4. 6. Strophe, Satz (eines Liedes u. s. w.); daher °सूक्त, wie die Stücke im AV. 8, 10. 9, 6. 11, 3. 12, 3. 15, 1 u. s. w. heissen AV. ANUR. बहुभिः पर्यायैरुपेता काचिदाद्योच्यते तत्र प्रथमे पर्यायं दर्शयति SĀJ. zu AIT. Br. 2, 8. — 6) Wechselbegriff, Synonym VIGĀJABARSHITA im ÇKDR. SUÇR. 1, 10, 9. पर्यायो मरणस्यायं निर्धनत्वं शरीरिणाम् PAÑĀT. II, 107. AK. 3, 4, 1. 3, 6, 2, 11. 16. H. 10. 18. 961. Schol. zu P. 2, 2, 16. 3, 73. 3, 2, 112. 7, 3, 18. SIDDB. K. zu P. 4, 4, 35. SĀH. D. 23, 14. — 7) eine best. rhetorische Figur SĀH. D. 733. PRATĀPAR. 102, a. — 8) Art und Weise (प्रकार) TRIK. 3, 3, 315. MED. अनेन पर्यायेण auf diese Weise SADDH. P. 4, 22, a. 23, b. — 9) = अचसर Gelegenheit, ein günstiger Augenblick AK. 3, 4, 24, 149. H. an. MED. — 10) = निर्माण Bildung, Schöpfung. — 11) = इव्यधर्म der Dinge Eigenschaften H. an. — 12) = संपर्कविशेषः । येन सह यत्सं-पर्कः संबन्धस्तेन सह तत्पर्यायः । यथा । समानं कुलभावं च दानादानं तथैव च । तयोर्वशसमानं हि पर्यायं च प्रचक्षते ॥ इति कुलदोषिका ॥ ÇKDR. — Vgl. वात°.

पर्यापरत्नमाला (प° + र°) m. die Perlschnur der Synonyme, Titel eines Wörterbuchs, Verz. d. Oxf. H. 196, b.

पर्यायवचन (प° + व°) Wechselbegriff, Synonym P. 4, 1, 68, Vārtt. 2. 3.

पर्यायवाचक (प° + वा°) adj. einen Wechselbegriff bezeichnend: बृह-द्वत्स मरुचेति शब्दाः पर्यायवाचकाः Synonyme MBh. 12, 12753. 12927. 13, 1012. 14, 1086.

पर्यायशब्द (प° + श°) m. Synonym: बुद्धेरमी पर्यायशब्दा भवन्ति TĀTTVAS. 8.

पर्यायशस्त्र (von पर्याय) adv. periodisch KĀṬH. 25, 2. SUÇR. 2, 314, 16. in